THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212
June 2024 Vol.4(6), 2234-2238

Popular Article

बरसात के मौसम में दुधारू पशुओं की देखभाल एवं प्रबंधन

[1]डॉ. कंचन आर्या, [2]डॉ. अभिषेक बहुगुणा, [3]डॉ. जी. एस. बिष्ट
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान)
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (सब्जी विज्ञान)
[3]प्राद्यापक (उद्यान विभाग) कृषि विज्ञान केंद्र, गैना, पिथौरागढ़
गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखंड
https://doi.org/10.5281/zenodo.12514059

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां पशुधन कृषि क्षेत्र का एक अभिन्न अंग बन गया है। देश में लगभग हर किसान गाय, भैंस, भेड़ और बकरी पालता है। पशुधन का स्वामित्व ज्यादातर सीमांत, छोटे और मध्यम किसानों के पास है, जो उनकी आजीविका के लिए कृषि के साथ–साथ आय का एक सहायक स्रोत है। कुल दूध उत्पादन, कुल गोजातीय और भैंस की आबादी के मामले में भारत रैंकिंग में शीर्ष पर है। दूध और मांस उत्पादन के मामले में पशु प्रोटीन एक प्रमुख स्रोत के रूप में हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया हैं। इसलिए पशुधन के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता हैं। चूँकि भारतीय उपमहाद्वीप में मौसमी भिन्नता बहुत अधिक हैं जिसका मुख्य कारण हमारे देश की भौगोलिक स्थिति और मानसून हैं। मानसून शब्द का प्रयोग मौसमी रूप से बदलते पैटर्न के वर्षा चरण को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लोगों की आजीविका के लिए मानसून सबसे महत्वपूर्ण है। भारत में जून से सितंबर के बीच की अवधि को मानसून अवधि माना जाता है। मौसम में बदलाव के कारण पशुधन को अलग–अलग परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हैं, अतः पशुधन को उचित प्रबंधन की आवश्यकता होती हैं। भारी बारिश में, पशुधन कई बीमारियों, मृत्यु दर, कुपोषण और तनाव के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं। इसलिए मानसून से पहले और मानसून के बाद सावधानी बरतने की जरूरत हैं। विपरीत मौसम हमेशा पशुधन के लिए हानिकारक होता हैं, विशेष रूप से मानसून जो विभिन्न रोगजनक जीवों यानी बैक्टीरिया, वायरस, कवक और परजीवियों के प्रसार के लिए अनुकूल होता हैं। अतः, पशुधन को बरसात के मौसम में उचित देखभाल एवं प्रबंधन की आवश्यकता होती हैं।

वर्षा ऋतु के दौरान पशुओं के प्रबंधन में मुख्य रूप से 3 बिन्दु **आवास प्रबंध**, **स्वास्थ्य प्रबंधन** और **पोषण प्रबंधन** महतव्पूर्ण हैं, जो निम्न प्रकार हैं:

1.आवास प्रबंधन

विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में पशुधन के लिए आश्रय सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक हैं। पशुओं को भारी बारिश, हवाओं या ओलों से आश्रय की आवश्यकता होती हैं। बरसात के मौसम में पानी के रिसाव को रोकने के लिए पशुशाला की मरम्मत मानसून से पहले की जानी चाहिए। पशुशाला की टपकती छतों से पशुओं को हानि होने का खतरा रहता हैं। यदि पशुशाला में पर्याप्त जल निकासी व्यवस्था नहीं हैं तो जल–जमाव के कारण मच्छर, मक्खियों और किलनी की संख्या में वृद्धि होती हैं क्योंकि

बारिश का मौसम कीड़ों के प्रजनन और वृद्धि के लिए सबसे अनुकूल होता हैं। गीला शेड कई जीवाणुओं के विकास में भी सहायक होता हैं जो अधिकांश बीमारियों का कारण बन सकता हैं। पशुशाला में वायु–संचार की भी उचित वयवस्था होनी चाहिए। यदि पशुशाला में उचित वायु संचार नहीं हैं तो अमोनिया और मीथेन जैसे रसायनों का निकास नहीं हो पता जो पशुधन की श्वसन प्रणाली को प्रभावित करता हैं। पशुशाला में वायु–संचार में सुधार हेतु एग्जॉस्ट पंखे, ड्राफ्ट पंखे या अन्य आउटलेट वेंटिलेटर सिस्टम के माध्यम से पूरा किया जा सकता हैं। बरसात के मौसम के दौरान सफाई और स्वच्छता महत्वपूर्ण हैं, इसके लिए पशुशाला और परिसर को 1–2 प्रतिशत फिनाइल, या बिना बुझा हुआ चूना या सोडियम हाइपोक्लोराइट, 2.5–4 प्रतिशत सोडियम कार्बोनेट से नियमित रूप से कीटाणुरहित करना चाहिए।

2.स्वास्थ्य प्रबंधन

बरसात के मौसम में बाहरी और आंतरिक परजीवी के मामले बढ़ जाते हैं। संक्रमित जानवर मिट्टी और पानी को दूषित कर सकते हैं जिससे अन्य जानवरों में रोग का संचरण बढ़ जाता हैं। साथ ही पशुशाला में उचित साफ सफाई न होने के कारण थनों की बीमारी (थनैला) रोग होने की संभावना रहती हैं। जल भराव के कारण खुरो की भी समस्या हो सकती हैं।

- **आंतरिक परजीवी संक्रमण :** भारत जैसे उष्णकटिबंधीय देश में बरसात के मौसम में एम्फिस्टोम्स और फैसीओलोसिस जैसे आंतरिक परजीवियों होने की संभावना बढ़ जाती हैं। बरसात के मौसम में जल निकायों के आसपास वनस्पति में संक्रामक मध्यवर्ती मेजबान (इंटरमीडिएट होस्ट) मौजूद होते हैं। पशु वनस्पति/हरे–भरे चारे के साथ–साथ मध्यवर्ती मेजबान (इंटरमीडिएट होस्ट) को भी खाते हैं और संक्रमित हो जाते हैं। परजीवी संक्रमण पशुधन उत्पादन के लिए एक प्रमुख बाधा हैं जिससे पशुधन उत्पादकों को भारी आर्थिक नुकसान होता हैं। यह पशु की कार्य क्षमता, वृद्धि, शरीर के वजन और दूध की पैदावार को कम करके उत्पादन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। उत्पादन घाटे को कम करने के लिए बरसात के मौसम की शुरुआत में और पूरे मौसम में कृमि मुक्ति का कार्य अवश्य करना चाहिए। पशु को प्रति वर्ष दो बार एल्बेंडाजोल से कृमि मुक्त करना चाहिए। गाभिन पशुओं को फेंडबेंडाजोल से कृमि मुक्त किया जाना चाहिए। मानसून के आगमन से पहले कुछ बीमारियों के लिए पशुओं का टीकाकरण बहुत महत्वपूर्ण हैं। गाय और भैंस जैसे बड़े जानवरों को हेमोरेजिक सेप्टिसीमिया (एच.एस.), ब्लैक–क्वार्टर (बी.क्यू.) का टीका लगाया जाना चाहिए। भेड़, बकरी जैसे छोटे जानवरों को बरसात के मौसम से पहले पेस्टे डेस पेटिट्स (पीपीआर) का टीका लगाना चाहिए।
- **बाहरी परजीवी संक्रमण :** बरसात के मौसम में किलनी का संक्रमण अधिक देखा जाता हैं। पशुशाला में बड़ी संख्या में किलनी, हीमोप्रोटोजोअन रोग जैसे ट्रिपैनोसोमियासिस, थेलेरियोसिस और बेबियोसिस जैसे रोगो का कारण बनती हैं। मुख्य रूप ये बिमारिया संकर नस्ल की गाय में देशी नस्ल से ज्यादा देखी जाती हैं। पशु बुखार, खून की कमी, बड़े हुए लसीका गांठ (लिम्फ नोड्स), दुबलापन , दूध उत्पादन मे कमी और संभावित गर्भपात जैसे लक्षण दिखता हैं। अगर प्रभावित जानवरों की ठीक से देखभाल न की जाए तो पशु की मृत्यु भी हो सकती हैं। बीमार पशु का जल्दी से जल्दी नजदीकी पशु चिकित्सक से उपचार करना चाहिए। इन बीमारियों की संभावना को कम करने के लिए पशु की, पशुशाला की और परिसर की साफ सफाई होनी चाहिए। अगर पशु में किलनी हैं तो उसे डेल्टामैथ्रिन, इवेरमेक्टिन या डोरमेक्टिन के घोल से नहलाना चाहिए। २ मिलीलीटर दवा को १ लीटर पानी मे मिला कर पशु के शरीर मे लगाना चाहिए , धयान रखे की पशु इसको चाटे नहीं , थोड़ी देर इस घोल को रहने दे फिर साफ पानी से नहालां दे। इसके अतिरिक्त, पशुशाला में दरारें नहीं होनी चाहिए क्योंकि किलनी वहां छिपती हैं और प्रजनन करती हैं। इनको कम करने के लिए, विशेष रूप से शाम के समय कच्चे नीम के पत्तों का धुआं लगाना चाहिए जिससे इनके रोकथाम में मदद मिलती हैं। सीताफल (एनोना स्क्वामोसा) और नीम (अजादिराक्टा इंडिका) के अर्क का उपयोग किलनी के विभिन्न जीवन चरणों के खिलाफ किया जाता हैं। नीम का अर्क पशुओं के किलनी संक्रमण से निपटने में प्रभावी पाया गया हैं। अर्क तैयार करने के लिए लगभग 2.5 किलोग्राम नीम

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 23.06.2024

की ताजी पत्तियों को इकट्ठा करके 4 लीटर गुनगुने पानी में रखा जाता हैं। इसके बाद, रात भर सामान्य कमरे के तापमान के तहत ठंडा होने दिया जाता हैं। सतह पर तैरनेवाला तरल (कच्चा अर्क) एकत्र और संग्रहीत किया जाता हैं। उपयोग के लिए इस स्टॉक घोल को 1–2 लीटर सामान्य पानी में मिलाया जा सकता हैं। जिसका उपयोग स्प्रे के रूप पशुओ में तथा पशुशाला में किया जा सकता हैं। इसके अलावा उचित मिश्रण में फ्लाई रिपेलेंट (साइपरमेथ्रिन, मेलाथियोन) का उपयोग किया जा सकता हैं। बरसात के मौसम में मक्खी के प्रजनन के कारण कीड़ों के घाव (मग्गेट्स) के मामले बढ़ जाते हैं। पशुओ में किसी भी प्रकार के घाव होने पर कीड़ों को मैन्युअल रूप से हटाने के लिए कपूर या तारपीन के तेल का उपयोग आवश्यक हैं। चोट, घाव, जख्मों पर नियमित रूप से स्वच्छता के साथ पट्टी बांधनी चाहिए।

- **ब्याने के बाद प्रबंधन :** ब्याने के बाद पशुओं के थन और पिछले हिस्से को पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवा) के एंटीसेप्टिक घोल वाले गुनगुने पानी से धोना चाहिए और साफ कपडे से सुखाना चाहिए। ब्याने के बाद 12 से 24 घंटों के भीतर प्लेसेंटा/जेर को बाहर निकालना जरुरी होता है। यदि यह 24 घंटे के भीतर न निकले तो पशुचिकित्सक की मदद लें और इसे मैन्युअल रूप से हटा देना चाहिए। दूध के बुखार (मिल्क फीवर), केटोसिस, एसिडोसिस जैसे किसी भी चयापचय संबंधी विकारों के लक्षणों के लिए गाय की सावधानीपूर्वक निगरानी की जानी चाहिए और तुरंत इलाज किया जाना चाहिए। नवजात बछड़े की नाल को नयी ब्लेड से कटना चाहिए और टिंक्चर आयोडीन या पोवोडीन आयोडीन से साफ करना चाहिऐ। साथ ही बछड़े को 2 से 4 घंटे के भीतर गाय का पहला दूध (क्लोलेस्टरम) पिलाना चाहिए। इसमें बडी मात्रा में गामा ग्लोब्युलिन होते हैं जिसमें गाय द्वारा उत्पादित एंटीबॉडी होते हैं जो रोग पैदा करने वाले जीवों के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता हैं।
- **थन संक्रमण :** बरसात के मौसम में गीले पशुशाला और बिस्तर के कारण थन संक्रमण अधिक होता हैं। यदि पशुशाला में गोबर और पेशाब की उचित निकासी न हो तो पशुओं के थन गन्दगी के संपर्क में आते हैं और थन के नलिका के माध्यम से थन और अयन में प्रवेश कर जाते हैं और संक्रमण का कारण बनते हैं, जिसे थनैला रोग कहा जाता हैं। पशु को बुखार हो जाता हैं, थनों में सूजन, लालिमा, दूध के रंग और गंध में बदलाव आ जाता हैं तथा पशु निढाल हो जाता हैं साथ ही दूध उत्पादन भी कम हो जाता हैं। यदि पशुओं को अनुपचारित छोड़ दिया जाता है तो इससे थन में गांठ (फाइब्रोसिस) हो जाती हैं और दूध उत्पादन में कमी आती हैं। इसके लिए पशु की तथा पशुशाला की उचित साफ सफाई होनी चाहिए। साथ ही दूध निकालने वाला भी अपने हाथो को साफ रखे। दूध निकलने से पहले तथा बाद थनों को गर्म पानी से धोना चाहिए। इसके अलावा बाजार में उपलब्ध (जमंज कपचे) टाट डिप्स का भी उपयोग कर सकते हैं। पशु को दूध निकलने के तुरंत बाद बैठने न दे, इसके लिए दूध निकलते समय पशु को चारा उपलब्ध कराना चाहिए। थन में किसी भी प्रकार के घाव होने पर तुरंत उपचार कराना चाहिए।
- **खुरो का स्वास्थ्य :** बरसात के मौसम में जमीन अधिकांश रहती हैं, जिससे फिसलने का खतरा और अंगों के फ्रैक्चर होने की संभावना रहती हैं। इसके लिए फुट मैट का प्रयोग करना चाहिए। पशुशाला में उचित जल निकासी न होने के कारण जब पशु लंबे समय तक पानी में खड़े रहते हैं, तो उनके पैरों में बैक्टीरिया के संक्रमण की संभावना रहती हैं, जिसका उनके स्वास्थ्य और उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। सुनिश्चित करें कि आपका पशु गीले वातावरण में न हो और उनके पैरों को कीटाणुरहित करने के लिए फुटबाथ का उपयोग करें।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 23.06.2024

1 रखरखाव हेतु खुर स्नान (फुट बाथ):

उत्पाद	प्राप्त करने के लिए पानी में मिलाएं
कॉपर सल्फेट	5–10 प्रतिशत मिश्रण
जिंक सल्फेट	5–10 प्रतिशत मिश्रण

2.औषधीय खुर स्नान (फुट बाथ):

उत्पाद	प्राप्त करने के लिए पानी में मिलाएं
टेट्रासाइक्लिन	0.1 प्रतिशत मिश्रण(1ग्राम/लीटर)
ऑक्सीटेरासाइक्लिन	0.1 प्रतिशत मिश्रण(1ग्राम/लीटर)
लिनकोमाइसिन	0.01 प्रतिशत मिश्रण (0.1ग्राम/लीटर)

- **शव निपटान :** मृत्यु के 24 घंटे के भीतर शवों का निपटान किया जाना चाहिए। मृत जानवरों के निपटान के लिए दफनाना सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला तरीका हैं। दफनाने के गड्ढे में सबसे निचला बिंदु मध्यम अच्छी जल निकासी से लेकर अत्यधिक अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में 6 फीट से अधिक गहरा नहीं होना चाहिए। भूजल दफनाने वाले गड्ढे में प्रवेश नहीं करना चाहिए। आर्द्रभूमि क्षेत्रों से बचना चाहिए। दफनाने का गड्ढा किसी भी कुएं और सतही जल स्रोत से कम से कम 100 फीट की दूरी पर होना चाहिए।

3. पोषण प्रबंधन : बरसात के मौसम में सूखे चारे का उचित प्रबंधन करने से पोषण संबंधी हानि को कम किया जा सकता हैं। संदूषण से बचने के लिए, विशेष रूप से एफ्लाटॉक्सिन से, संकेंद्रित फीड (दाने) को नमी–रोधी कमरे में संग्रहित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, यदि टूटी छत से बारिश के पानी के रिसाव के कारण भंडारण सामग्री गीली हो जाती हैं, तो उसमें फफूंद विकसित हो जाएगी। यदि हम जानवरों को फफूंदयुक्त चारा देते हैं तो यह एंटेराइटिस (दस्त) का कारण बनता है। पानी के संपर्क में आने वाली या पूरी तरह से पानी में डूबी हुई घास सुखा कर पशु को देनी चाहिऐ। पशु को हरे–भरे चरागाहों में ले जाने से बचाना चाहिए क्योंकि मानसून में पाई जाने वाली अधिकतर हरी–भरी घासों में कम फाइबर के साथ अधिक नमी होती हैं। पशुओं को अपरिपक्व घास खिलाने से दस्त हो सकता हैं जिससे शरीर की स्थिति और भी खराब हो सकती हैं। इसके अलावा, यदि पशु ऐसी घास खाते हैं, तो दूध में वसा की मात्रा में गिरावट के साथ–साथ पोषक तत्वों की कमी दिखाई देने लगती हैं। इससे बचने के लिए, हरे चारे को सूखे चारे के साथ मिला कर देना चाहिए। सूखे और हरे चारे का उचित अनुपात (60:40) बनाए रखना आवश्यक हैं। पशु के आहार में नियमित रूप से लगभग 50 ग्राम खनिज मिश्रण देना चाहिए। मवेशियों के लिए प्रचुर मात्रा में चारे के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण खनिज पूरक और स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

बरसात के मौसम के दौरान कुछ सामान्य निवारक उपाय :

- बरसात के मौसम की शुरुआत से पहले और उसके दौरान पशुओं को विभिन्न आंतरिक परजीवियों के लिए कृमि मुक्त करें।
- बाह्य परजीवियों को नियंत्रित करने के लिए पशुशाला में कीटनाशकों का नियमित छिड़काव करें।
- पशुओं को संक्रामक रोगों यानी हेमोरेजिक सेप्टिसीमिया (एचएस), ब्लैक क्वार्टर (बीक्यू) और खुरपका–मुंहपका रोग (एफएमडी)के लिए टीका लगाया जाना चाहिए।
- दूध की पैदावार बढ़ाने के लिए हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा भी दें। बरसात के मौसम में जानवरों को चरने के लिए कभी न छोड़ें।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 23.06.2024

- चारे की कमी को रोकने के लिए, किसान घास और साइलेज जैसे अपरंपरागत चारा तैयार कर सकते हैं। इनके साथ–साथ वे जानवरों की खनिज आवश्यकता को पूरा करने के लिए यूरिया गुड़ खनिज ब्लॉक (यूएमएमबी) या खनिज मिश्रण (50 ग्राम) जैसे खनिज ब्लॉकों का भी उपयोग कर सकते हैं।
- पशुओं को पीने के लिए साफ पानी उपलब्ध कराएं।
- पशुशाला में उचित वेंटिलेशन प्रदान करें।
- पशुओं को थन संक्रमण से बचाने के लिए गाय के गोबर, बचे हुए भोजन और मूत्र को बार–बार साफ करें।
- संक्रमण को आगे फैलने से रोकने के लिए शव को जलाकर और गहरे दफनाने की विधि द्वारा उचित निपटान करें।
- पशुओं को लम्बे परिवहन और अल्प–पोषण जैसे दीर्घकालिक तनाव से बचायें।

निष्कर्ष : मानव जीवन के साथ–साथ पशुधन या घरेलू पशुओं की प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों से सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि पशुओं के रखरखाव के माध्यम से पशुपालकों को आर्थिक लाभ मिलेगा। सही समय पर उचित कार्रवाई किसान को भारी बारिश जैसी प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान से बचा सकती है। इसलिए, पशुओं को किसी भी तनाव या बीमारी से बचाने के लिए पशुपालकों को मौसम के भीतर होने वाली उपरोक्त समस्याओं और उनके निवारक उपायों को ध्यान में रखना चाहिए।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 23.06.2024